>

Title: Regarding reported news about 33 Indian soldiers missing from Leh-Ladakh.

योगी आदित्यनाथ (गोरखपुर): अध्यक्ष महोदया, कृपया मुझे भी बोलने का अवसर दीजिए...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : हम सबको बुलाएंगे। मैं आपको बुलाऊंगी। आपका नाम है। आप जरा धैर्य रखिए। हम सबको मौका देंगे।

â€¦(व्यवधान)

श्री मनीष तिवारी (लुधियाना): अध्यक्ष महोदया, लेह में जो प्राकृतिक आपदा के कारण त्रासदी हुई और जानमाल का नुकसान हुआ है। उन लोगों का दुख बांटने के लिए सारा देश एक है। आपने भी अपनी ओर से इस सदन का दुख व्यक्त किया है। लेकिन मैं आपका ध्यान एक बहुत ही गंभीर मामले की ओर दिलाना चाहता हूं कि कई समाचार-पत्रों में यह खबर छपी थी कि बिहार रेजीमेंट के 33 जवान पाकिस्तान नियंत्रित कश्मीर में बह गये। उसके बाद कई समाचार-पत्रों में यह खबर भी छपी कि शायद वे क्षतिग्रस्त हो गये हैं।

मैं केन्द्र सरकार से जानना चाहता हूं, क्योंकि यह बहुत ही गम्भीर मसला है। इसलिए सरकार इस पर स्पष्टीकरण दे कि जो 33 जवान हैं, क्या वे बह गये हैं, क्या उनमें से कुछ मिले हैं या उनके बारे में सरकार को आज तक क्या खबर मिली है? मैं इस मामले को इसलिए गम्भीर मानता हूं क्योंकि पाकिस्तान सेना का जो इतिहास रहा है, जिस तरह से उन्होंने भारतीय सैनिकों के साथ बदसलूकी की है, उसे सब जानते हैं। मैं कैप्टन सौरभ कालिया का जिक्र करना चाहूंगा कि कारगिल युद्ध शुरू होने से पहले जिस तरह से उसे यातनाएं देकर मारा गया था, उसे ध्यान में रखते हुए यह एक बहुत ही गम्भीर मसला है। मैं समझता हूं कि इसके ऊपर सरकार को सदन को स्पष्टीकरण देना चाहिए कि उन 33 जवानों की परिस्थिति क्या है?...(व्यवधान)

श्री जगदीश शर्मा (जहानाबाद): महोदया, वे बिहार के जवान है और वे लापता हैं। ...(व्यवधान) बिहार के जवान कहां है, इस बारे में सरकार को स्पष्टीकरण देना चाहिए।...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : ठीक है, आप बैठ जाइये।

â€¦(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : आप बैठ जाइये। ऐसे शून्यकाल कैसे चलेगा। आप अपने आपको इससे सम्बद्ध कर लीजिए।

â€¦(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : श्री हंसराज अहीर,

श्री अर्जुन मेघवाल,

प्रो. रामशंकर,

श्री अशोक अर्गल,

श्री राजेन्द्र अग्रवाल,

श्री वीरेन्द्र कुमार और

श्री दिलीपकुमार मनसुखलाल गांधी अपने आपको इस विषय से सम्बद्ध करते हैं।

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : मैडम, मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूं कि आपने मुझे बोलने का मौका दिया। रमजान मुबारक का आज पहला जुमा है, मुझे जाना है, मैं ज्यादा समय नहीं लूंगा। मैं आपके माध्यम से सदन का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं कि लेह, लद्दाख में जो इतनी बड़ी घटना हुई, सरकार कितनी संवेदनहीन है कि वहां करीब 600 लोग मारे गए हैं और सरकार 282 लोगों के मारे जाने की बात कबूल कर रही है। उसमें कई सैनिक जो बिहार के रहने वाले थे, लेकिन वे देश के सैनिक थे। करीब 33 सैनिक जो सीमा पर भारत की निगरानी कर रहे थे, वे बहकर पाकिस्तान चले गए। आप पाकिस्तान का व्यवहार तो जानती ही हैं कि वह किस तरह का व्यवहार हमारे सैनिकों के साथ करता है। आज तक सरकार ने या डिफेंस मिनिस्टर ने एक भी स्टेटमेंट नहीं दिया, जबकि इस पर स्टेटमेंट होना चाहिए था। मैं बहुत दिनों से सदन में हूं, लेकिन मैं पहली बार देख रहा हूं कि जहां हमारे 33 सैनिक बहकर चले गए और 600 लोगों से ज्यादा मर गए हों, डिफेंस मिनिस्टर ने अभी तक यहां कोई संवेदना उनके प्रति प्रकट नहीं की है और न ही कोई स्टेटमेंट हुआ। यहां पर स्वास्थ्य मंत्री जी मौजूद हैं, वह खुद कश्मीर से हैं। उन सैनिकों के परिवार वाले, जो बिहार के हैं, वे हमसे कांटेक्ट कर रहे हैं। हमें आपका इस विषय पर संरक्षण चाहिए। लगता है यह सरकार उन सैनिकों के लिए चिंतित नहीं है। क्या उनके परिवार वाले उन्हें तलाशने के लिए पाकिस्तान जाएंगे? मेरी सरकार से मांग है कि वह तुंत सदन में इस विषय पर स्टेटमेंट दे। वहां जो घटना हुई है, उसके बारे में जानकारी दे और उन सैनिकों की चिंता करे जो बहकर पड़ोसी मुल्क में चले गए हैं, क्योंकि उनकी अभी तक बॉडी भी नहीं मिली है। पूरे देश के अंदर इस बात का गुस्सा है इसलिए सरकार को जागना चाहिए। मेरा आपके जरिए सरकार से यही अनुरोध है। मैं चाहूंगा कि सरकार तुंत इतनी बड़ी घटना पर स्टेटमेंट दे, लेकिन सरकार अभी तक खामोश है। इनकी खामोशी का राज़ क्या है, यह हम जानना चाहते हैं? इसलिए सरकार को रिस्पॉंड करना चाहिए, क्योंकि यह कोई मामूली बात नहीं है। वे 33 सैनिक देश की रक्षा कर रहे थे, वे कोई टयूरिस्ट्स नहीं थे। सीमा से वे बह गए हैं इसलिए सरकार को उस पर तुंत रिस्पॉंड करना चाहिए।

अध्यक्ष महोदया: श्री अर्जुन मेघवाल, श्री राजेन्द्र अग्रवाल भी अपने को इस विषय के साथ एसोसिएट करते हैं। स्वास्थ्य मंत्री जी इस पर कुछ कहना चाहते हैं।

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री (श्री गुलाम नबी आज़ाद): मैडम स्पीकर, वैसे तो यह डिफेंस मिनिस्टर साहब को कहना चाहिए, लेकिन ऐसा नहीं है कि हम लोग नहीं गए। केन्द्र सरकार के दो केबिनेट मिनिस्टर फारुक अब्दुल्ला साहब और मैं दूसरे दिन ही वहां पहुंच गए थे। लेह में जो प्राकृतिक आपदा से नुकसान हुआ था, उसका जायजा लिया था। यहां पर सीनियर्स लोगों को मालूम होगा कि पहाड़ी इलाके में, खासकर लद्दाख में दो बजे के बाद फ्लाइट नहीं जाती है, हैलिकॉप्टर भी नहीं जाता है। लेकिन तब भी हम दोनों केबिनेट मिनिस्टर्स ने दबाव डालकर हैलिकॉप्टर से वहां जाने का तय किया और शाम को छः बजे वहां लैंड किया और उन जगहों को देखा। वहां पर ब्रिगेडियर आर्मी के और एयर फोर्स के लोग भी पोस्ट के सामने थे, जिन्होंने वह जगह भी दिखाई। वह पूरा एरिया जिसमें 25 सैनिक थे, तीन लोडर्स थे, जो उसके नीचे आए हैं। वह करीब 20-25 फीट, यहां से तकरीबन आधा किलोमीटर तक चौड़ा और इतना ही लम्बा एरिया है। उसमें आर्मी वाले बचाव कार्य में लगे हुए हैं। बॉर्डर का जो रास्ता है, वह पीओके के पास का है।

यह वही इलाका है जो वर्ष 1971 में हमने पीओके से रिट्रीव किया था, उस इलाके में यह घटना हुई है। मैं सदन को बताना चाहता हूं कि ऐसा नहीं है कि वहां कोई गया नहीं है।

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन (भागलपुर): मैडम, हमने भी नोटिस दिया है। ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : ठीक है, आप इस मुद्दे को उठा लीजिए। अभी शून्यकाल चल रहा है। आप उन्हें बैठ जाने दीजिए। आप इस मुद्दे को उठा लीजिए।

â€¦(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : यदि आप इस तरह से बोलेंगे तो जिन्होंने नोटिस दिया है, वे कब बोलेंगे। आप इन्हें बोल लेने दीजिए, उसके बाद आपको भी बुला लेंगे। अभी आप बैठ जाइये।